राजनीती - 12

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. दक्षिण एशिया क्षेत्र की विशेषताओं का विवरण दीजिए।

अथवा

श्रीलंका के जातीय संघर्ष के मुख्य कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— श्रीलंका में जातीय संघर्ष--- श्रीलंका के जातीय संघर्ष में भारतीय मूल के तमिल प्रमुख भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। उनके संगठन लिट्टे की हिंसात्मक कार्यवाहियों तथा आन्दोलन की वजह से श्रीलंका को जातीय संघर्ष का सामना करना पड़ा। लिट्टे की प्रमुख माँग है कि श्रीलंका के एक क्षेत्र को अलग राष्ट्र को अलग राष्ट्र बनाया जाए।

श्रीलंकाई राजनीति पर बहुसंख्यक सिंहली समुदाय का वर्चस्व रहा है और तमिल सरकार एवं राजनेताओं पर उनके हितों को अनदेखी किया जाने का दोषारोपण किया गया। सिंहली राष्ट्रवादियों को मान्यता है कि श्रीलंका में तमिलों के साथ कोई रियासत नहीं की जानी चाहिए क्योंकि श्रीलंका केवल सिंहलो लोगों का है।

तमिलों के प्रति उपेक्षित व्यवहार से एक उग्र तमिल राष्ट्रवाद को आवाज बुलर हुई। सन् 1983 के पश्चात् उग्र तमिल संगठन 'लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम' (लिट्टे) देश को सेना के साथ सशल संपर्षरत है। इसने तमिल ईसम अर्थात् श्रीलंकाई तमिलों हेतु एक पृथक देश की मांग कर डाली। यहाँ मह उत्तेयनीय है कि सन् 2009 में श्रीलंकाई सरकार द्वारा लिट्टे का सफाया कर दिया गया इसके बाद टक्त स्थिति में बदलाव आया है।

2. ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को नियंत्रित करने हेतु भारत द्वारा किये गये प्रयासों का उल्लेख कीजिए। 3

अथवा

पर्यावरण सम्बन्धी मसलों पर भारत के पक्ष की व्याख्या कीजिए।

उत्तर— ग्रीन हाटस गैसों के उत्सर्जन को नियन्त्रित करने हेतु भारत द्वारा किए गए निम्न प्रयास विशेष रूप से उल्लेखनीय है–

(i) हमारे देश भारत ने क्योटो प्रोटोकाल को मन् 2002 में हस्ताक्षरित करके उसका अनुमोदन किया है।

(ii) भारत ने अपनी गटीय मोटर-कार भन नीति के अन्नगंत वाहनों के लिए म्यार इंधन अनिवार्य कर दिया है।

(iii) सन् 2001 में पारित जहां मंरक्षण अधिनियम के अन्तर्गत जहां के अधिक कारगर उपयोग पर विगेप और दिया गया है।

(iv)विद्युत अधिनियम, 2003 के अन्तर्गत प्राकृतिक गैस के आयात, अरणीय कहां के उपयोग तथा स्वच्छ कोयले के उपयोग पर आधारित प्रौद्योगिकी को अपनाने की दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया है।

(v) भारत बायोडीजल से सम्बन्धित एक राष्ट्रीय मिशन चलाया जा रहा है। जिनमें जैविक उत्पादों का प्रयोग कर डांजल प्राप्त किया जा रहा ताकि परम्परागत ऊजां संसाधनों का संरक्षन हो तथा ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन भी न हो। उक्त उदाहरणों से भारत सरकार के पपंजरा से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से वैश्विक प्रयासों में भाग लेते रहने का भी पता चलता है।

3. क्या आंदोलनों को राजनीति की प्रयोगशाला कहा जा सकता है? आन्दोलनों के दौरान नए प्रयोग किये जाते
हैं और सफल प्रयोगों को राजनीतिक दल क्यों अपना लेते हैं?

अथवा

चिपको आंदोलन के प्रमुख कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— चिपको आन्दोलन के कारण–चिपको आन्दोलन के कारण निनांकित थे-- (i) इस आन्दोलन का प्रारम्भ उत्तराखण्ड के दो-तीन गांवों से हुआ था। इन गावो के निवासियों ने वन विभाग से अपील की कि खेतो-बाडी से संबंधित ओजारों के निर्माण हेतु अंगू के पेड़ काटने की अनुमति प्रदान की जाये। वन विभाग ने अनुमति देने से मना कर दिया। परंतु वन विभाग ने खेल सामग्री निर्माता एक कंपनी को जमीन का यही भाग व्यावसायिक उपयोग हेतु दे दिया। इससे गांव वालो कों में विरोध उत्पत्र हुआ ।

(ii) इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी तथा आर्थिक शोषण के कहीं बड़े सवाल उठने लगे। गाँव वालों ने मांग रखी कि वन की कटाई का ठेका किसी बाहरी व्यक्ति को नहीं दिया जाना चाहिए तथा स्थानीय लोगों का जल, जंगल-जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर उपयुक्त नियंत्रण होना चाहिए।

(iii) गाँववासी चाहते थे कि सरकार लघु उद्योगों के लिए कम कीमत की सामग्री उपलब्ध कराए व इस क्षेत्र के पारिस्थितिकी संतुलन को हानि पहुँचाए बिना यहाँ का विकास निश्चित करे। आन्दोलन ने भूमिहीन वन कर्मचारियों का आर्थिक मुद्दा भी उठाया।

(iv) इस क्षेत्र में वनों की कटाई के दौरान ठेकेदार यहाँ के पुरुषों को शराब आपूर्ति का भी व्यवसाय करते थे। अतः स्त्रियों ने शराबखोरी की लत के विरोध में भी आवाज बुलंद की। धीरे-धीरे इसमें कुछ और सामाजिक मुद्दे आकर जुड़ गए।

4. 1989 के बाद की अवधि में भारतीय राजनीति के मुख्य मुद्दे क्या रहे हैं? इन मुद्दों से राजनीतिक दलों के
आपसी जुड़ाव के क्या रूप सामने आए हैं?

अथवा

गठबंधन की राजनीति की विचारधारा किन पहलुओं पर निर्भर करती है?

उत्तर— गठबंधन की राजनीति की विचारधारा के प्रमुख पहलू–

1. नयी आर्थिक नीति पर सहमति--- कई समूह नयो आर्थिक नीति के खिलाफ हैं, लेकिन ज्यादातर राजनीतिक दल इन नीतियों के पक्ष में हैं। अधिकतर दलों का मानना है कि नई आर्थिक नीतियों से देश समृद्ध होगा और भारत, विश्व की एक आर्थिक शक्ति बनेगा।

2. पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की स्वीकृति--- राजनीतिक दलों ने पहचान लिया है कि पिछड़ी जातियों के सामाजिक और राजनैतिक दावे को स्वीकार करने की जरूरत है। इस कारण आज सभी राजनीतिक दल शिक्षा और रोजगार में पिछड़ी जातियों के लिए सीटों के आरक्षण के पक्ष में हैं। राजनीतिक दल यह भी सुनिश्चित करने के लिए तैयार हैं कि 'अन्य पिछड़ा वर्ग' को सत्ता में समुचित हिस्सेदारी मिले।

3. देश के शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका की स्वीकृति--- प्रांतीय दल और राष्ट्रीय दत का भेद अब लगातार कम होता जा रहा है। प्रांतीय दल केन्द्रीय सरकार में साझीदार बन रहे हैं और इन दलों ने पिछले बीस सालों में देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

4. विचारधारा की जगह कार्यसिद्धि पर · 'जोर और विचारधारागत सहमति के बगैर राजनीतिक गठजोड़--- गठबंधन की राजनीति के इस दौर में राजनीतिक दल विचारधारागत अंतर की जगह सत्ता में हिस्सेदारी की बातों पर जोर दे रहे हैं, मिसाल के लिए अधिकतर दल भाजपा की 'हिन्दुत्व' की विचारधारा से सहमत नहीं हैं, लेकिन ये दल भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल हुए और सरकार बनाई, जो पांच साल तक चली।

5. श्रीलंका के जातीय संघर्ष में किनकी भूमिका प्रमुख है?

उत्तर- श्रीलंका के जातीय संघर्ष में सिंहलियों के बहुसंख्यकवाद एवं तमिलों के आतंकवाद दोनों की ही मुख्य भूमिका रही है। श्रीलंका में मुख्य रूप से सिंहली समुदाय की अधिकता है जो भारत छोड़कर श्रीलंका आ बसे तमिलों के खिलाफ हैं। सिंहली राष्ट्रवादियों का मानना है कि श्रीलंका में तमिलों के साथ कोई रियायत नहीं बरती जानी चाहिए क्योंकि श्रीलंका केवल सिंहली समुदाय का है। तमिलों के प्रति उपेक्षा भरे बर्ताव से एक उग्र तमिल राष्ट्रवाद की आवाज़ बुलन्द हुई। सन् 1983 के पश्चात् से उग्र तमिल संगठन लिवरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिट्टे) श्रीलंका की सेना के साथ सशस्त्र संघर्ष प्रारंभ किया। इसने 'तमिल ईलम' अर्थात् श्रीलंका के तमिलों के लिए एक अलग राष्ट्र की माँग रखी। धीरे-धीरे श्रीलंका में जातीय संघर्ष तेज होने लगा। विस्फोट एवं हत्याएँ होने लगी। सन् 1987 में भारत ने श्रीलंका में शान्ति सेना भेजी; जिसे श्रीलंका की जनता ने पसन्द नहीं किया। फलस्वरूप सन् 1989 में भारत ने अपनी शान्ति सेना बिना लक्ष्य प्राप्त किये वापस बुला ली। भारत व श्रीलंका ने इस जातीय संघर्ष की समाप्ति के लिए भरपूर प्रयास किये, लेकिन सफलता नहीं मिली। सन् 2009 में लिट्टे प्रमुख प्रभाकरन के सैनिक कार्यवाही में मारे जाने के पश्चात् लिट्टे के खात्मे के साथ ही सशस्त्र संघर्ष समाप्त हो गया।

6. दक्षिणी एशिया में द्विपक्षीय सम्बन्धों को बाहरी शक्तियाँ कैसे प्रभावित करती हैं?

उत्तर- कोई भी क्षेत्र अपने को गैर-इलाकाई ताकतों से अलग रखने की कितनी भी कोशिश क्यों न करे उस पर बाहरी ताकतों और घटनाओं का असर पड़ता ही है। चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका दक्षिण एशिया की राजनीति में अहम् भूमिका निभाते हैं। भारत और चीन के सम्बन्धों में पहले से निकटता आई है। परन्तु चीन के सम्बन्ध पाकिस्तान से भी हैं, इस कारण भारत-चीन सम्बन्धों में इतनी निकटता नहीं आ पायी है। यह एक बड़ी कठिनाई के रूप में है। शीतयुद्ध के बाद दक्षिण एशिया में अमेरिकी प्रभाव तेजी से बढ़ा है। अमेरिका ने शीतयुद्ध के बाद भारत और पाकिस्तान दोनों से अपने सम्बन्ध बेहतर किये हैं। दोनों में आर्थिक सुधार हुए हैं और उदार नीतियाँ अपनायी गयी हैं। इससे दक्षिण एशिया में अमेरिकी भागीदारी ज्यादा गहरी हुई है। अमेरिका में दक्षिण एशियाई मूल के लोगों की संख्या अच्छी-खासी है। फिर इस क्षेत्र की सुरक्षा और शान्ति के भविष्य से अमेरिका के हित भी बंधे हुए हैं। बाहरी शक्तियाँ अपने लाभों या हितों को ध्यान में रखकर दक्षिण एशियाई देशों से सम्बन्ध रखती हैं ताकि वे अपने हितों को पूरा कर सकें।

7. साझी परन्तु अलग-अलग जिम्मेदारियों से क्या अभिप्राय है? हम इस विचार को कैसे लागू कर सकते हैं?

उत्तर- विश्व पर्यावरण की रक्षा के सम्बन्ध में 'साझो लेकिन अलग-अलग जिम्मेदारियाँ' विचार के प्रतिपादन का तात्पर्य है कि विश्व पर्यावरण की रक्षा में विकसित देशों की जिम्मेदारी अधिक है। यह जिम्मेदारी विकसित व

विकासशील देशों के लिए बराबर नहीं हो सकती। इसके अलावा अभी गरीब देश विकास के पथ पर गुजर रहे हैं, अतः उनके ऊपर पर्यावरण रक्षा की जिम्मेदारी विकसित देशों के बराबर नहीं हो सकती। इस प्रकार सन् 1992 में हुए रियो सम्मेलन (पृथ्वी सम्मेलन) में माना गया कि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून के निर्माण, प्रयोग और व्याख्या में विकासशील देशों की विशिष्ट जरूरतों का ध्यान रखना चाहिए। साझी जिम्मेदारी तथा अलग-अलग भूमिका के सिद्धान्त को लागू करने हेतु यह आवश्यक है कि विभिन्न देशों द्वारा पर्यावरण प्रदूषण के लिए उत्तरदायी गैसों के उत्सर्जन व तत्वों के प्रयोग का आकलन किया जाए तथा प्रदूषण रोकने के प्रयासों में उसी अनुपात में उस देश की जिम्मेदारी तय की जाए। चूँकि पर्यावरण प्रदूषण का मुद्दा एक साझा वैश्विक मुद्दा है; अतः विकसित देशों को आधुनिक प्रौद्योगिकी का विकास कर गरीब देशों को उपलब्ध कराना आवश्यक है। जो देश अभी तक प्राकृतिक संसाधनों का दोहन नहीं कर पाए हैं तथा अभी विकास की प्रक्रिया में पीछे हैं, उन्हें आधुनिक प्रौद्योगिकी व तकनीक प्रदान कर पर्यावरण रक्षा हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

8. वैश्विक पर्यावरण की सुरक्षा से जुड़े मुद्दे 1990 के दशक से विभिन्न देशों के प्राथमिक सरोकार क्यों बन गए हैं?

उत्तर- वैश्विक पर्यावरण की सुरक्षा से जुड़े मुद्दे 1990 के दशक में निम्न कारणों से विभिन्न देशों के प्राथमिक सरोकार बन गए हैं—

(1) खाद्यान्न उत्पादन में कमी आना--- दुनिया में जहाँ जनसंख्या बढ़ रही है, वहीं कृषि योग्य भूमि में कोई बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है। जलाशयों की जलराशि में कमी तथा उनका प्रदूषण, चरागाहों की समाप्ति तथा भूमि के अधिक सघन उपयोग में उसकी उर्वरता कम हो रही है तथा खाद्यान्न उत्पादन जनसंख्या के अनुपात में कम हो रहा है।

(2) स्वच्छ जल की उपलब्धता में कमी आना--- संयुक्त राष्ट्र संघ की विश्व विकास रिपोर्ट, सन् 2016 के अनुसार
जलस्रोतों के प्रदूषण के कारण दुनिया की 66.3 करोड़ जनता को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं होता। 30 लाख से
अधिक बच्चे स्वच्छ जल तथा स्वच्छता की कमी के कारण मौत के शिकार हो जाते हैं।

(3) जैव विविधता का क्षरण होना--- वनों के कटाव से जैव विविधता का क्षरण तथा जलवायु परिवर्तन का खतरा
उत्पन्न हो गया है।

(4) ओजोन परत का क्षय होना--- क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैसों के उत्सर्जन से जहाँ वायुमण्डल की ओजोन परत का क्षय हो रहा है, वहीं ग्रीन हाउस, गैसों के कारण ग्लोबल वार्मिंग की समस्या खड़ी हो गई है। ग्लोबल वार्मिंग से कई देशों के जलमग्न होने का खतरा बढ़ गया है।

(5) समदतटीय क्षेत्रों में प्रदूषण का बढ़ना--- समुद्रतटीय क्षेत्रों के प्रदूषण के कारण समुद्री पर्यावरण की गुणवत्ता में
गिरावट आ रही है। चूँकि विश्व समुदाय को यह आभास हो गया है कि उक्त समस्याएँ वैश्विक हैं तथा इनका समाधान बिना वैश्विक सहयोग के सम्भव नहीं है, अतः पर्यावरण का मुद्दा विश्व राजनीति का भी अंग बन गया
है।

9. दलित पैंथर्स ने कौन-कौनसे मुद्दे उठाए?

उत्तर- बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक के प्रारम्भिक वर्षों से शिक्षित दलितों की पहली पीढ़ी ने अनेक मंचों से अपने हक की आवाज उठायी। इनमें अधिकतर शहर की झुग्गी-बस्तियों में पलकर बड़े हुए दलित थे। दलित हितों की दावेदारी के इसी क्रम में महाराष्ट्र में दलित युवाओं का एक संगठन 'दलित पैंथर्स' सन् 1972 ई. में गठित हुआ।

मुद्दे- दलित पैंथर्स के द्वारा उठाए गए प्रमुख मुद्दे निम्नांकित थे—

(i) स्वतंत्रता के पश्चात् के वर्षों में दलित समूह मुख्यतया जाति आधारित असमानता तथा भौतिक साधनों के मामले में अपने साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ लड़ रहे थे। वे इस बात को लेकर

जागरूक थे कि संविधान में जाति आधारित किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध गारंटी दी गयी है।

(ii) भारतीय संविधान में अस्पृश्यता की प्रथा को समाप्त कर दिया गया है। सरकार द्वारा इसके अन्तर्गत साठ व सत्तर के दशक में कानून बनाए गए। इसके बावजूद प्राचीन काल में जिन जातियों को अछूत माना गया था, उनके साथ 'इस नए दौर में भी सामाजिक भेदभाव व हिंसा का व्यवहार कई रूपों में लगातार जारी रहा।

(iii) दलितों की बस्तियाँ मुख्य गाँव से अब भी दूर होती थीं। दलित महिलाओं के साथ यौन-अत्याचार होते थे।

जातिगत प्रतिष्ठा की छोटी-छोटी बातों को लेकर दलितों पर सामूहिक अत्याचार किए जाते थे। दलितों के सामाजिक व आर्थिक उत्पीड़न को रोक पाने में कानून की व्यवस्था अपर्याप्त सिद्ध हो रही थी।

10. क्या आंदोलन और विरोध की कार्यवाहियों से देश का लोकतंत्र मजबूत होता है। अपने उत्तर की पुष्टि में उदाहरण दीजिए।

उत्तर- जन आन्दोलनों का इतिहास हमें लोकतांत्रिक राजनीति को बेहतर तरीके से समझने में सहायता प्रदान करता है। इन आन्दोलनों का उद्देश्य दलीय राजनीति की कमियों को दूर करना था। समाज के गहरे तनावों और जनता के क्षोभ को एक सार्थक दिशा देकर इन आन्दोलनों ने एक प्रकार से लोकतंत्र की रक्षा की है। सक्रिय भागीदारी के नए रूपों के प्रयोग ने भारतीय लोकतंत्र के जनाधार को बढ़ाया है। अहिंसक व शान्तिपूर्ण आन्दोलनों से देश का लोकतंत्र मजबूत होता है। अपने उत्तर की पुष्टि में अग्रलिखित उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं

(i) चिपको आन्दोलन अहिंसक, शान्तिपूर्ण ढंग से चलाया गया एक व्यापक जन-आन्दोलन था। इससे वृक्षों

की कटाई, वनों का उजड़ना बंद हुआ। पशु-पक्षियों, आदिवासियों को जल, जंगल, जमीन तथा स्वास्थ्यवर्द्धक

पर्यावरण मिला, सरकार लोकतांत्रिक माँगों के सामने झुकी।

(ii) दलित पैंथर्स के नेताओं द्वारा चलाए गए आन्दोलनों, सरकार विरोधी साहित्यकारों की कविताओं व रचनाओं

ने, आदिवासी अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों तथा पिछड़ी जातियों में चेतना जगाई। दलित पँथर्स जैसे राजनैतिक दल व संगठन बने। जातिगत भेदभाव व अस्पृश्यता को धक्का लगा। समाज में समानता, स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय, राजनैतिक न्याय को सुदृढ़ता मिली।

(iii) वामपंथियों द्वारा शान्तिपूर्वक चलाए गए किसान व मजदूर आन्दोलन द्वारा जन-साधारण में जागृति, राष्ट्रीय

कार्यों में भागीदारी व सर्वहारा वर्ग की उचित माँगों हेतु सरकार को जगाने में सफलता प्राप्त हुई।

(iv) ताड़ी विरोधी आन्दोलन ने नशाबंदी व मद्य निषेध के मुद्दे पर वातावरण तैयार किया। महिलाओं से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ (यौन उत्पीड़न, घरेल समस्या, दहेज प्रथा तथा महिलाओं को विधायिकाओं में
न प्रथा तथा महिलाओं को विधायिकाओं में आरक्षण दिया जाना) उठीं। संविधान में कुछ संशोधन हुए तथा कानून बनाए गए।

11. कांग्रेस के प्रभुत्व का दौर समाप्त हो गया है। इसके बावजूद देश की राजनीति पर कांग्रेस का असर लगातार कायम है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए?

उत्तर- मैं इस कथन से असहमत हूँ कि कांग्रेस के प्रभुत्व का दौर समाप्त हो गया है। इसके बावजूद देश की राजनीति पर कांग्रेस का असर लगातार कायम है। 1989 की हार के साथ भारत की दलीय व्यवस्था में उसका दबदबा समाप्त हो गया। 1991 के पश्चात इस पार्टी की सीटों की संख्या एक बार फिर बढ़ी। 2004 व 2009 के चुनावों में कांग्रेस ने पुनः अपना रंग दिखाया और पहले से काफी अधिक सीटों पर जीत प्राप्त की लेकिन 2014 के चुनाव में यह पार्टी मात्र 44 सीटों पर सिमटकर सत्ता से बाहर हो गयी। 2019 के चुनावों में जहाँ भाजपा को 303 सीटें मिली वहीं कांग्रेस 52 सीटों पर सिमटकर रह गयी। राज्यों में इसका प्रभाव कम हो रहा है। किन्तु राजस्थान, मध्यप्रदेश, पंजाब जैसे राज्यों में कांग्रेस द्वारा अपनी सरकार बनाना इसके भारतीय राजनीति में असर को प्रदर्शित करता है। इतना लम्बा समय व्यतीत हो जाने के पश्चात भी आज भारतीय लोगों के दिमाग पर कांग्रेस की छाप देखने को मिलती है। आज भी बहुत से लोग कांग्रेसवादी परम्पराओं का निर्वहन करते हुए देखने को मिलते हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि कांग्रेस के प्रभुत्व का दौर समाप्त हो गया है तथा देश की राजनीति पर कांग्रेस का असर धीरे-धीरे कम हो रहा है।

12. मण्डल आयोग का सविस्तार वर्णन करो।

उत्तर- **मंडल आयोग की नियुक्ति-** न्द्र सरकार ने सन् 1978 में एक आयोग का गठन किया और इसको पिछड़ा वर्ग की स्थिति को सुधारने के उपाय बताने का काम सौंपा गया। आमतौर पर इस आयोग को इसके अध्यक्ष बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल के नाम पर 'मंडल कमीशन' कहा जाता है। मंडल आयोग का गठन भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों के बीच शैक्षिक और सामाजिक पिछड़ेपन की व्यापकता का पता लगाने और इन पिछड़े वर्गों की पहचान के तरीके बताने के लिए किया गया था। आयोग से यह भी अपेक्षा की गयी थी कि वह इन वर्गों के पिछड़ेपन को दूर करने के उपाय सुझाएगा।

मंडल आयोग की सिफारिशें-- आयोग ने सन् 1980 में अपनी सिफारिशें पेश कीं। इस समय तक जनता पार्टी की सरकार गिर चुकी थी। आयोग का सुझाव था कि पिछड़ा वर्ग को पिछड़ी जाति के अर्थ में स्वीकार किया जाए। आयोग ने एक सर्वेक्षण किया और पाया कि इन पिछड़ी जातियों की शिक्षा संस्थाओं तथा सरकारी नौकरियों में बड़ी कम मौजूदगी है। इस वजह से आयोग ने इन समूहों

के लिए शिक्षा संस्थाओं तथा सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत सीट आरक्षित करने की सिफारिश की। मंडल आयोग ने अन्य पिछड़ा वर्ग की स्थिति सुधारने के लिए कई और सुझाव दिए जिनमें भूमि-सुधार भी एक था।

13. नेपाल में लोग अपने देश में लोकतंत्र को बहाल करने में कैसे सफल हुए?

उत्तर– अतीत में नेपाल एक हिन्दू राज्य था। आधुनिक काल में यहाँ कई वर्षों तक संवैधानिक राजतन्त्र रहा। इस दौर में नेपाल को राजनीतिक पार्टियों और आम जनता खुले और उत्तरदायो शासन को आवाज उठाते रहे। लेकिन राजा ने सेना को सहायता से शासन पर पूरा नियन्त्रण कर लिया और नेपाल में लोकतन्त्र को राह अवरुद्ध हो गयी, लेकिन एक मजबूत लोकतन्त्र समर्थक आन्दोलन से विवश होकर सन् 1990 में राजा ने नये लोकतान्त्रिक संविधान को मांग मान ली, परन्तु नेपाल में लोकतान्त्रिक सरकारों का कार्यकाल बहुत छोटा और समस्याओं से भरा रहा।

सन् 1990 के दशक में नेपाल के माओवादी, नेपाल के अनेक हिस्सों में अपना प्रभाव कायम करने में कामयाब हुए। माओवादी, राजा और सत्ताधारी अभिजन के बीच त्रिकोणीय संघर्ष हुआ। सन् 2002 में राजा ने संसद को भंग कर दिया और सरकार को गिरा दिया। इस प्रकार नेपाल में जो भी छोड़ा-बहुत लोकतन्त्र था, उसे राजा ने खत्म कर दिया। अप्रैल 2006 में यहाँ देशव्यापी तोकतन्त्र समर्धक प्रदर्शन हुआ और राजा ज्ञानेन्द्र ने बाध्य होकर संसद को बहाल किया। इस तरह नेपाल के लोग अपने देश में लोकतन्त्र को बहाल करने में सफल हुए। सन् 2000 में नेपाल राजतन्त्र को खत्म कर लोकतान्त्रिक गणराज्य बना तथा सन् 2015 में उसने नया संविधान अपनाया।

14. वैश्विक राजनीति में किन्हीं तीन चिन्ताजनक पर्यावरणीय मुद्दों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– वैश्विक राजनीति में पर्यावरणीय महत्त्व के तीन मुहे निम्नवत् हैं–

(1)विश्व में अब कृषि भूमि का विस्तार करना असम्भव है। वर्तमान में उपलब्ध भूमि के एक बड़े भाग की उर्वरता लगातार कम होती चली जा रही है। जहाँ चारागाहों के चारे समाप्त होने के कगार पर हैं वहीं मछली भण्डार भी निरन्तर कम होता जा रहा है। इसी तरह जलाशयों का जल-स्तर तेजी से घटा है और जल प्रदूषण बढ़ गया है। खाद्य उत्पादो में भी लगातार कमी होती चली जा रही है।

(2) सन् 2016 में जारी संयुक्त राष्ट्र की विश्व विकास रिपोर्ट के अनुसार विकासशील देशो की 66.3 करोड़ जनता को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं होता तथा यहाँ की दो अरब चालीस करोड़ की आबादी साफ-सफाई की सुविधा से वंचित है। उक्त कारण से लगभग तीस लाख से अधिक बच्चे प्रतिवर्ष असमय काल के गाल में समा जाते हैं।

(3) पृथ्वी के ऊपरी वायुमण्डल में ओजोन की मात्रा लगातार घट रही है जिसके फलस्वरूप पारिस्थितिकी तन्त्र तथा मानवीय स्वास्थ्य पर गम्भीर संकट आ गया है।

15. जन आन्दोलन का क्या अर्थ है? दल समर्थित (दलीय) और स्वतंत्र (निर्दलीय) आन्दोलनों का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **जन आन्दोलन-**प्रजातांत्रिक मर्यादाओं तथा संवैधानिक नियमों के आधार पर तथा सामाजिक शिष्टाचार से संबंधित नियमों के पालन सहित सरकारी नीतियों, कानून व प्रशासन सहित किसी मसले पर व्यक्तियों के समूह अथवा समूहों के द्वारा असहमति प्रकट किया जाना जन-आन्दोलन कहलाता है। इन आन्दोलनों के अन्तर्गत प्रदर्शन, नारेबाजी, जुलूस जैसे क्रियाकलाप सम्मिलित हैं।

इस प्रकार के जन आन्दोलनों में दल समर्थित(दलीय) और स्वतंत्र (निर्दलीय) आन्दोलनों का स्वरूप इस प्रकार है–

(i) दल आधारित (दलीय) आन्दोलन-- जब किसी राजनैतिक दल अथवा राजनैतिक दलों से समर्थन प्राप्त समूहों द्वारा आन्दोलन संचालित किए जाते हैं तो इन्हें दलीय आन्दोलन कहा जाता है, जैसे- जाति विरोधी आन्दोलन, छुआछूत विरोधी आन्दोलन आदि। किसान सभा आन्दोलन एक दलीय आन्दोलन था । दलीय आन्दोलन संगठित प्रकृति के आन्दोलन होते हैं।

(ii) स्वतंत्र (निर्दलीय) आन्दोलन-सरकार की नियोजित व्यवस्था के असफल होने व लोकतांत्रिक संस्था में अविश्वास की स्थिति उत्पन्न होने व चुनाव आधारित राजनीति बन जाने के कारण ये आन्दोलन अस्तित्व में आते हैं। ये आन्दोलन असंगठित लोगों के समूह द्वारा संचालित निर्दलीय आन्दोलन होते हैं, जैसे-चिपको आन्दोलन, दलित पैंथर्स आन्दोलन आदि। इस श्रेणी में बहुत से कर्मचारी यूनियनों, व्यावसायिक संघों आदि द्वारा संचालित आन्दोलन शामिल हैं।

16. नेहरू जी के बाद राजनीतिज्ञों को भारत में राजनैतिक उत्तराधिकार की चुनौती क्यों समझ में आने लगी?3

उत्तर-- **भारत में राजनैतिक उत्तराधिकार की संग चुनौती-** (i) मई 1964 में नेहरूजी की मृत्यु य हो गयी। वह पिछले एक साल से भी अधिक समय से बीमार चल रहे थे। इससे नेहरूजी के राजनैतिक उत्तराधिकारी को लेकर बड़े अंदेशे लगाए गए कि नेहरूजी के बाद में कौन? परन्तु, भारत जैसे नव-स्वतंत्र देश में इस माहौल में एक और गंभीर प्रश्न उठ खड़ा हुआ था कि नेहरूजी के बाद आखिर इस देश में क्या होगा ?

(ii) भारत से बाहर के कई लोगों को संदेह था कि यहाँ नेहरूजी के बाद लोकतंत्र कायम भी रह पाएगा या नहीं। दूसरा प्रश्न इसी शक के दायरे में उठा था। आशंका यह थी कि बाकी बहुत से नव-स्वतंत्र देशों की तरह भारत भी राजनीतिक उत्तराधिकार का सवाल लोकतांत्रिक ढंग से हल नहीं कर पाएगा।

(iii) राजनैतिक. उत्तराधिकार के चयन में असफल होने की दशा में डर था कि सेना राजनीतिक भूमिका में उतर जाएगी। इसके अतिरिक्त, इस बात को लेकर भी संदेह था कि देश के सामने बहुत-सी कठिनाइयाँ खड़ी हैं तथा नया नेतृत्व उनका समाधान खोज पाएगा या नहीं। सन् 1960 के दशक को 'खतरनाक दशक' कहा जाता था। क्योंकि गरीबी, सांप्रदायिकता तथा क्षेत्रीय विभाजन आदि के सवाल

अभी भी अनसुलझे थे। संभव था कि इन कठिनाइयों के कारण देश में लोकतंत्र की परियोजना असफल हो जाती या स्वयं देश ही बिखर जाता।

17. दक्षेस क्या है? दक्षिण एशिया की शांति व सहयोग में इसका क्या योगदान है?

उत्तर–

दक्षेस (सार्क)

दक्षेस से आशय है-दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (साउथ एशियन एसोशियन फॉर रिजनल कोऑपरेशन)। यह दक्षिण एशिया के आठ देशों (भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, मालदीव, श्रीलंका एवं अफगानिस्तान) का एक क्षेत्रीय संगठन है, जिसकी स्थापना इन देशों ने आपसी सहयोग बढ़ाने के उद्देश्य से की है। इसका मुख्यालय काठमांडू (नेपाल) में है।

दक्षिण एशिया की शान्ति व सहयोग में सार्क का योगदान–

(i) सार्क ने अपने आवें सदस्य देशों को एक-दूसरे के नजदीक लाने का कार्य किया है, जिससे उनमें दिखाई देने वाला न्य तनाव कम हुआ है। दक्षेस के सहयोग से भारत और पाकिस्तान के मध्य तनाव में कमी आयो है और दोनों देश युद्ध के जोखिम कम नों करने के लिए विश्वास बहाली के उपाय ले करने पर सहमत हो गये हैं।

(ii) दक्षेस के कारण इस क्षेत्र के देशों की होने थोड़े-थोड़े अन्तराल पर आपसी बैठकें होती रहती हैं, जिससे उनके छोटे-मोटे मतभेद अपने आप आसानी से सुलझ रहे हैं एवं इन देशों में अपनापन विकसित हुआ है।

(iii) दक्षेस के माध्यम से इस क्षेत्र के देशों ने अपने आर्थिक व सामाजिक विकास के लिए सामूहिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया है। जिससे विदेशी शक्तियों का इस क्षेत्र में प्रभाव कम हुआ है। ये देश अब अपने को अधिक, स्वतन्त्र महसूस करने लगे हैं। ही।

(iv) दक्षेस ने एक संरक्षित अन्न भण्डार की स्थापना की है जो इस क्षेत्र के देशों की आत्मनिर्भरता की भावना के प्रबल होने का का सूचक है।

18. मूलवासियों द्वारा किये गये संघर्ष का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर-- **(i) विश्व समुदाय में बराबरी का दर्जा पाने के लिए आन्दोलन--** मूलवासियों को एक लम्बे समय से सभ्य समाज में दोयम दर्जे का माना जाता था। उन्हें बराबरी का दर्जा प्राप्त ल नहीं था। वर्तमान विश्व में शेष जन समुदाय के अपने प्रति निम्न स्तर के व्यवहार को देखकर उन्होंने विश्व समुदाय में बराबरी का दर्जा पाने के लिए अपनी आवाज बुलन्द की है।

(ii), स्वतन्त्र पहचान की माँग- आस्ट्रेलिया या न्यूजीलैण्ड सहित ओसियाना क्षेत्र के बहुत से द्वीपीय देशों में हजारों वर्षों से पॉलिनेशिया, का : मैलांनेशिया एवं माइक्रोनेशिया वंश के मूलवासी रहते चले आ रहे हैं। इन मूलवासियों की अपने देश की सरकारों से मांग है कि उन्हें मूलवासी कौम के रूप में अपनी स्वतन्त्र पहचान रखने वाला समुदाय माना जाये।

(iii) मूलवास स्थान पर अपने अधिकार की माँग-- मूलवासी अपने मूलवास स्थान पर अपना अधिकार चाहते हैं। अपने मूलवास स्थान पर अपने अधिकार की माँग हेतु सम्पूर्ण विश्व के मूलवासी यह कहते हैं कि हम यहाँ अनन्त काल से निवास करते चले आ रहे हैं।

(iv) राजनीतिक स्वतन्त्रता की मांग-- भौगोलिक रूप से चाहे मूलवासी अलग-अलग स्थानों पर निवास कर रहे हैं, लेकिन भूमि और उस पर आधारित जीवन प्रणालियों के बारे में इनकी विश्व दृष्टि एकसमान है। भूमि की हानि का इनके लिए अर्थ है-आर्थिक संसाधनों के एक आधार की हानि एवं यह मूलवासियों के जीवन के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

19. जन आन्दोलन के मुख्य कारणों का वर्णन कीजिए।

अथवा

जन आंदोलनों के भारतीय राजनीति पर पड़े प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-- **जन आन्दोलन--** प्रजातांत्रिक मर्यादाओं तथा संवैधानिक नियमों के आधार पर सामाजिक शिष्टाचार से सम्बन्धित नियमों के पालन सहित सरकारी नीतियों, कानून व प्रशासन सहित किसी मसले पर व्यक्तियों के समूह अथवा समूहों के द्वारा असहमति प्रकट किया जाना जन-आन्दोलन कहलाता है।

इस प्रकार के आन्दोलनों का उद्देश्य सरकार का ध्यान उन मुद्दों की ओर आकर्षित करने का रहता है जिन्हें आन्दोलनकारी समूह अपने व राष्ट्र दोनों के हितों में उचित नहीं समझते हैं। इस प्रकार के जन आन्दोलनों में दल समर्थित (दलीय) और स्वतंत्र (निर्दलीय) आन्दोलन प्रमुख हैं।

जन-आन्दोलन के मुख्य कारण- जन आन्दोलन के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–

(i) सरकार द्वारा आम जनता के हितों की अनदेखी करना। (ii) सरकार द्वारा क्षेत्र विशेष के पारिस्थितिकीय विनाश पर ध्यान नहीं दिया जाना। (iii) सरकार की आर्थिक नीतियों से जनता का मोह भंग होना। (iv) देश में राजनीतिक अस्थिरता का माहौल होना। (v) लोकतांत्रिक सरकार की प्रकृति में सुधार लाना। (vi) सामाजिक भेदभाव एवं हिंसा का वातावरण। (vii) समाज में कई कारणों से असंतोष उत्पन्न होना। (viii) सरकार पर अपनी मांगों को मानने के लिए दबाव डालना। (ix) सामाजिक बुराई को समाप्त करना जैसे दक्षिण भारत में महिलाओं द्वारा शराब माफियाओं व सरकार दोनों के विरुद्ध संचालित ताड़ी-विरोधी आन्दोलन। (x) बहुउद्देशीय सिंचाई परियोजनाओं द्वारा लोगों के जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव।

20. बहुदलीय प्रणाली के लाभों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **भारत में बहुदलीय प्रणाली के लाभ--** भारत में बहुदलीय प्रणाली के निम्नांकित लाभ हैं–

(i) भारत विविधताओं का देश है, ऐसी विविधताओं वाले देश के लिए यह आवश्यक है कि कई राजनीतिक दल हों वैसे भी लोकतंत्र में दलीय प्रथा प्राणतुल्य होती है। राजनीतिक दल जनमत का

निर्माण करते हैं, चुनावों में हिस्सा लेते हैं, सरकार बनाते हैं और विपक्ष की भूमिका का निर्वाह करते हैं।

(ii) दलीय प्रणाली के कारण सरकार में दृढ़ता आती है क्योंकि दलीय आधार पर सरकार को समर्थन प्राप्त होता रहता है।

(iii) दलीय प्रणाली जनता को राजनीतिक शिक्षा प्रदान करती है। राजनीतिक दल सभाएँ करते हैं, सम्मेलन करते हैं, अपने दल की नीतियों और कार्यक्रम बताकर जनता के सामने प्रचार करते हैं। तत्कालीन सरकार की आलोचना करते हैं। संसद में अपना पक्ष राजनीतिक शिक्षा प्राप्त होती रहती है।

(iv) दलीय प्रणाली में शासन व जनता दोनों में अनुशासन बना रहता है। राष्ट्रीय हितों पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

(v) कई राजनीतिक दल राजनीतिक कार्यों के साथ-साथ सामाजिक सुधार के कार्य भी करते हैं।

(vi) विपक्षी दल सरकार को निरंकुशता पर रोक लगाते हैं तथा सत्तारूढ़ दल को स्वेच्छाचारी बनने से रोकते हैं।

(vii) मतदाता जिस मत का होगा उसी विचारधारा के राजनीतिक दल. को मत दे सकता है लेकिन द्वि-दलीय व्यवस्था में केवल दो में से एक दल को मत देना पड़ता हैं।

21.बांग्लादेश में लोकतंत्र की स्थापना की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर-- बांग्लादेश में लोकतन्त्र की स्थापना की प्रक्रिया–

(i) संसदीय लोकतन्त्र की स्थापना-- स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् स्वतन्त्र बांग्लादेश की सरकार का गठन हुआ। बांग्लादेश ने अपना एक संविधान बनाया जिसमें इसे धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक एवं समाजवादी देश घोषित किया गया।

(ii) संसदीय लोकतन्त्र के स्थान पर अध्यक्षीय लोकतन्त्र-- सन् 1975 में शेख मुजीबुर्रहमान ने बांग्लादेश के संविधान में संशोधन कराया, जिसमें संसदीय शासन के स्थान पर अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली को मान्यता दी गयो। शेख मुजीब ने अपनी पार्टी अवामी लीग को छोड़कर अन्य समस्त पार्टियो को समाप्त कर दिया, जिससे बांग्लादेश में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गयी। इस स्थिति में अगस्त 1975 में बांग्लादेशी सेना ने शेख मुजीब के विरुद्ध बगावत कर दी। सेना द्वारा शेख मुजीब की हत्या कर दी गयी।

(iii) सैनिक शासन की स्थापना- शेख मुजीब की हत्या के पश्चात् नये सैनिक शासक जियाउर्रहमान ने अपनी बांग्लादेश नेशनल पार्टी का निर्माण किया और सन् 1977 ई. के चुनाव में एच. एम. इरशाद के नेतृत्व में एक और सैनिक सरकार का गठन किया गया।

(iv) लोकतन्त्र स्थापना की मांग- सैनिक शासन की स्थापना के बावजूद बांग्लादेश में लोकतन्त्र की स्थापना की माँग निरन्तर उठती रही। लोकतन्त्र की स्थापना से सम्बन्धित आन्दोलन में छात्रों ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। लगातार विरोध को देखते हुए जनरल इरशाद ने बाध्य होकर राजनीतिक गतिविधियों की छूट दे दी। इसके स्थान पर जनरल इरशाद आगामी 5 वर्षों के

लिए राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। सन् 1990 ई. में जनता के व्यापक विरोध के आगे झुकते हुए लेफ्टिनेंट जनरल इरशाद को राष्ट्रपति के पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

(v) पुनः लोकतन्त्र की स्थापना–सन 1991 में बांग्लादेश में चुनाव हुए। इसके पश्चात् बांग्लादेश में बहुदलीय चुनावों पर आधारित प्रतिनिधिमूलक लोकतन्त्र आज तक स्थापित है।

22. एजेण्डा-21 से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख बिन्दुओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— **एजेण्डा-21 का अभिप्राय-** सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र संघ का पर्यावरण एवं विकास के मुद्दे पर केन्द्रित एक सम्मेलन ब्राजील के रियो-डी-जेनेरियो में हुआ था। इस सम्मेलन को पृथ्वी सम्मेलन के नाम से भी जाना जाता है। इस पृथ्वी सम्मेलन में 170 देशों के प्रतिनिधियों, हजारों स्वयंसेवी संगठनों तथा अनेक बहुराष्ट्रीय निगमों ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन के दौरान विश्व राजनीति में पर्यावरण को एक ठोस स्वरूप मिला।

इस अवसर पर 21 वी सदी के लिए एक विशाल कार्यक्रम अर्थात् एजेण्डा-21 पारित किया गया। सभी राज्यों से निवेदन किया गया कि वे प्राकृतिक सन्तुलन को बनाए रखें, पर्यावरण के प्रदूषण को रोकें तथा पोषणीय विकास का रास्ता अपनाएँ।

एजेण्डा-21 के प्रमुख बिन्दु निम्नवत् थे–

(1) पर्यावरण एवं विकास के मध्य सम्बन्ध के मुद्दों को समझा जाए।

(2) ऊर्जा का अधिक कुशल तरीके से प्रयोग किया जाए।

(3) किसान भाइयों को पर्यावरण सम्बन्धी जानकारी दी जाए।

(4) प्रदूषण फैलाने वालों पर भी अर्थदण्ड लगाए जाए, तथा

(5) इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय योजनाएँ बनाई एवं लागू की जाएँ।

23. नर्मदा बचाओ आंदोलन ने नर्मदा घाटी की बाँध परियोजनाओं का विरोध क्यों किया? .

उत्तर-- गुजरात के सरदार सरोवर और मध्य प्रदेश के नर्मदा सागर बाँध के रूप में दो सबसे बड़ी . और बहु-उद्देश्यीय परियोजनाओं का निर्धारण किया गया। नर्मदा नदी के बचाव में नर्मदा बचाओ आन्दोलन चला। इस आन्दोलन ने बाँधों के निर्माण का विरोध किया। नर्मदा बचाओ आन्दोलन इन बाँधों के निर्माण के साथ-साथ देश में चल रही विकास परियोजनाओं के औचित्य पर भी सवाल उठाता रहा है। नर्मदा आन्दोलन अपने गठन की शुरुआत से ही सरदार सरोवर परियोजना को विकास परियोजनाओं के मुद्दों से जोड़कर देखता रहा है। आन्दोलनकारियों द्वारा बाँध परियोजनाओं के निर्माण के विरोध में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए–

(i) बाँध से प्रकृति, नदियों, पर्यावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस क्षेत्र में बाँध बनाए जाते हैं वहाँ रह रहे गरीबों के घर-बार, उनकी खेती योग्य भूमि, वर्षों से चले आ रहे कुटीर उद्योगों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। उदाहरणार्थ; सरदार सरोवर परियोजना पूर्ण होने पर संबंधित राज्यों (गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र) के 245 गाँव डूब (जल-मग्न) के क्षेत्र में सम्मिलित हैं।

(ii) परियोजना पर किए जाने वाले खर्च में हेरा-फेरी के दोष उजागर करना भी परियोजना विरोधी स्वयंसेवकों का प्रमुख उद्देश्य था।
(iii) वे प्रभावित लोगों को आजीविका तथा उनकी संस्कृति के साथ-साथ पर्यावरण को भी बचाना चाहते थे। वे जल, जंगल तथा जमीन पर प्रभावित लोगों का नियंत्रण अथवा उन्हें उचित मुआवजा तथा उनका पुनर्वास चाहते थे।
(iv) आन्दोलन ने एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह भी उठाया कि लोकतंत्र में कुछ लोगों के लाभ के लिए अन्य लोगों को नुकसान क्यों उठाना चाहिए?
(v) ऐसी परियोजनाओं को निर्णय प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों की भागीदारी होनी चाहिए।

24. 1989 के बाद की अवधि में भारतीय राजनीति के मुख्य मुद्दे क्या रहे हैं? इन मुद्दों से राजनीतिक दलों के आपसी जुड़ाव के क्या रूप सामने आए हैं?

उत्तर-- सन् 1989 के बाद की अवधि में भारतीय राजनीति के मुख्य मुद्दे--
(i) लोकसभा के आम चुनावों में कांग्रेस की भारी हार हुई। उसे केवल 197 सीटें ही मिली। अतः सरकारें अस्थिर रहीं तथा सन् 1991 में दुबारा मध्यावधि चुनाव हुआ। कांग्रेस की प्रमुखता समाप्त होने के कारण देश के राजनीतिक दलों में आपसी जुड़ाव बढ़ा। राष्ट्रीय मोर्चे की दो बार सरकारें बनीं परन्तु कांग्रेस द्वारा समर्थन खींचने तथा विरोधी दलों में एकता की कमी के कारण देश में राजनैतिक अस्थिरता रही।
(ii) देश की राजनीति में मंडल मुद्दे का उदय हुआ। इसने सन् 1989 के पश्चात् की राजनीति में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। सभी दल वोटों की राजनीति करने लगे, अतः अन्य पिछड़े वर्ग के लोगों को आरक्षण दिए जाने के मामले में अधिकांश दलों में परस्पर जुड़ाव हुआ।
(ii) सन् 1990 के पश्चात् विभिन्न दलों की सरकारों ने जो आर्थिक नीतियाँ अपनाईं, वे बुनियादी तौर पर बदल चुकी थी। आर्थिक सुधार व नवीन आर्थिक नीति के कारण देश के अनेक दक्षिणपंथी राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दलों में आपसी जुड़ाव होने लगा। इस संदर्भ में दो प्रवृत्तियाँ उभरकर आई। कुछ पार्टियों गैर कांग्रेसी गठबंधन और कुछ दल गैर भाजप गठबंधन के समर्थक बने।
(iv) दिसम्बर 1992 में अयोध्या स्थित एक विवादित ढाँचा विध्वंस कर दिया गया। इस घटना के पश्चात् भारतीय राष्ट्रवाद एवं धर्मनिरपेक्षता पर वहस तेज हो गयो। इन परिवर्तनों का सम्बन्ध भाजपा के उदय तथा हिन्दुत्व को राजनीति से है।

25. भारत बांग्लादेश के बीच सहयोग व विवाद के दो-दो मसलों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर— दोनों ही देश भारत और पाकिस्तान के मध्य स्वतन्त्रता से लेकर अब तक निरन्तर तनाव की स्थिति बनी रही है। सन् 1960 में विश्व बैंक की मदद से भारत और पाकिस्तान ने 'सिन्धु जल सन्धि' पर हस्ताक्षर किये और यह सन्धि भारत-पाक के बीच कई सैन्य संघर्षों के बावजूद अब भी कायम है। विगत वर्षों के दौरान दोनों देशों के पंजाब वाले हिस्से के बीच कई बस मार्ग खुले हैं।

सन् 1999 में भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान की बस यात्रा की और लाहौर गये तथा शान्ति के एक घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर किये। इसके बावजूद जुलाई 1999 में भारत और पाकिस्तान के मध्य कारगिल युद्ध हुआ। जुलाई, 2001 को आगरा में हुई शिखर वार्ता में भारत के प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयी और पाक राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ ने भाग लिया। पर यह शिखर वार्ता भी किसी निष्कर्ष पर न पहुँच सकी।

दोनों देशों के मध्य 20 जनवरी, 2006 को तीसरा सड़क मार्ग अमृतसर व लाहौर के बीच बस सेवा शुरू हुई। मार्च 2006 में ननकाना और अमृतसर के बीच बस सेवा शुरू हुई। 2018 में पाकिस्तान सरकार ने ति 'करतारपुर कॉरिडोर' का शिलान्यास किया ।

जिसका भारत ने भी समर्थन किया। नवम्बर 2019 में इस कॉरिडोर को खोला गया।

26. रियो सम्मेलन के क्या परिणाम हुए?

उत्तर— रियो सम्मेलन (पृथ्वी सम्मेलन) के निम्न परिणाम हुए---

(i) इस सम्मेलन के परिणामस्वरूप विश्व राजनीति के दायरे में पर्यावरण को लेकर बढ़ते सरोकारों को एक ठोस रूप मिला।

(ii) रियो सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता और वानिकी के सम्बन्ध में कुछ नियमाचार निर्धारित किए गए।

(iii) भविष्य के विकास के लिए 'एजेंडा-21' प्रस्तावित किया गया जिसमें विकास के कुछ तौर-तरीके भी सुझाए गए। इसमें टिकाऊ विकास (Sustainable Development) की धारणा को विकास रणनीति के रूप में समर्थन प्राप्त हुआ।

(iv) इस सम्मेलन में पर्यावरण रक्षा के बारे में धनी व गरीब देशों अथवा उत्तरी गोलार्द्ध व दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के दृष्टिकोण में । मतभेद उभकर सामने आए। भारत व चीन तथा ब्राजील जैसे विकासशील देशों का तर्क था कि चूंकि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन विकसित देशों ने अधिक किया है, अत: वे पर्यावरण प्रदूषण क्षरण के लिए अधिक उत्तरदायी हैं। अत: उन्हें पर्यावरण रक्षा हेतु अधिक संसाधन व प्रौद्योगिकी आदि उपलब्ध कराना चाहिए। कई धनी देश इस तर्क से सहमत नहीं थे।

(v) अन्ततः रियो सम्मेलन ने यह स्वीकार किया कि अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून के निर्माण, प्रयोग और व्याख्या में विकासशील देशों की विशिष्ट जरूरतों का लेकिन अलग-अलग भूमिका का सिद्धान्त स्वीकृत किया गया। संक्षेप में, रियो सम्मेलन के बाद पर्यावरण का प्रश्न विश्व राजनीति में महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा।

27. सूचना का अधिकार आंदोलन क्या है ? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर— **सूचना का अधिकार आन्दोलन--** सूचना का अधिकार आन्दोलन जन-आन्दोलनों की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। यह आन्दोलन सरकार से एक बड़ी माँग को पूरा कराने में सफल रहा है। इस आन्दोलन की शुरुआत सन् 1990 में हुई तथा इसका नेतृत्व मजदूर किसान शक्ति संगठन

(एम.के.एस. एस) ने किया। राजस्थान में काम कर रहे इस संगठन ने सरकार के सामने यह माँग रखी कि अकाल राहत कार्य व मजदूरों को दी जाने वाली मजदूरी के अभिलेख का सार्वजनिक खुलासा किया जाए। यह माँग राजस्थान के एक बेहद पिछड़े इलाके भीम तहसील में सबसे पहले उठाई गयी थी। इस आन्दोलन के अन्तर्गत ग्रामीणों ने प्रशासन से अपने वेतन व भुगतान के बिल उपलब्ध कराने को कहा। असल में, इन लोगों को यह लग से रहा था कि विद्यालयों, अस्पतालों, छोटे बाँधों व सामुदायिक केन्द्रों के निर्माण कार्य के दौरान उन्हें दी गयी मजदूरी में भारी हेरा-फेरी की गई। केवल कहने के लिए तो ये विकास परियोजनाएँ पूरी हो गयी थीं परन्तु लोगों का मानना था कि सभी कार्यों में धन का घोटाला हुआ है। पहले सन् 1994 व उसके बाद सन् 1996 में मजदूर किसान शक्ति संगठन ने जन-सुनवाई का आयोजन किया तथा प्रशासन को इस मामले में अपना पक्ष स्पष्ट करने को कहा।

28. भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका व महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-- **भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों की भूमिका-** भारत एक विशाल राष्ट्र है, इसके विभिन्न क्षेत्रों की कठिनाइयाँ भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए क्षेत्रीय समस्याओं को सुलझाने हेतु राजनीतिक दलों का गठन हो जाता है। सामान्यतः लोगों के हृदयों में राष्ट्रीय हित के मुकाबले क्षेत्रीय हितों को महत्त्व देने की भावना अधिक प्रबल होती है। इसी कारण भारत में अनेक क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का निर्माण हुआ है। तमिलनाडु में डी.एम.के. उड़ीसा (ओडिशा) में बीजू जनता दल, पंजाब में अकाली दल, जम्मू एवं कश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस एवं आन्ध्र प्रदेश में तेलुगुदेशम् आदि प्रमुख हैं।

क्षेत्रीय दलों का महत्त्व-- क्षेत्रीय दलों का महत्त्व निम्नांकित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है

(1) क्षेत्रीय दल किसी विशेष क्षेत्र में रहने वाले लोगों की समस्याओं से सम्बन्ध रखते हैं। अत: वे अपने-अपने क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को सुलझाने में सफल होते हैं।

(2) सामान्यतः क्षेत्रीय दल मुख्य विरोधी दल को अधिक मजबूत करते हैं तथा सरकार को स्वेच्छाचारी बनने से रोकने का कार्य करते हैं।

(3) क्षेत्रीय दलों के जो सदस्य सांसद चुने जाते हैं, वे अपनी स्थानीय समस्याओं की ओर सम्पूर्ण देश का ध्यान आकर्षित करते हैं।

(4) अब क्षेत्रीय दलों का दृष्टिकोण राष्ट्रीय बनता जा रहा है। उन्होंने पहले एन.डी.ए के काल में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में लगभग छ: वर्षों से अधिक समय के लिए संघीय सरकार चलाने में अमूल्य योगदान दिया और बाद के वर्षों में यू.पी.ए. में हिस्सेदारी करके देश का शासन चलाया है। वर्तमान मोदी सरकार में भी क्षेत्रीय दलों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

29. शीतयुद्ध के बाद के समय में दक्षिण एशिया के देशों की राजनीतिक प्रणाली का वर्णन करें।

उत्तर-- **दक्षिण एशिया के देशों की राजनीतिक प्रणाली--** शीतयुद्ध के पश्चात् के समय में इस क्षेत्र के देशों में एवं यहाँ के लोगों में मुख्य प्रवृत्ति लोकतान्त्रिक राजनीतिक प्रणाली को अपनाने की रही है। यथा---

(i) भारत व श्रीलंका-- भारत व श्रीलंका के स्वतन्त्र होने के पश्चात् से आज तक लोकतान्त्रिक व्यवस्था सफलतापूर्वक कार्य कर रही है।

(ii) पाकिस्तान और बांग्लादेश-- शीतयुद्ध के पश्चात् के समय में बांग्लादेश में लोकतन्त्र कायम रहा। पाकिस्तान में शीतयुद्ध के पश्चात् के समय में लगातार दो लोकतान्त्रिक सरकारों का गठन हुआ।

(iii) नेपाल-- नेपाल में अप्रैल 2006 तक संवैधानिक राजतन्त्र था, अप्रैल 2006 में एक सफल जनविद्रोह हुआ तथा सन् 2008 में राजतन्त्र के खात्मे के साथ लोकतन्त्र की बहाली हुई।

(iv) भूटान-- भूटान भारत का एक पड़ोसी देश है। भूटान में राजतन्त्र व्यवस्था से शासन संचालित हो रहा था, लेकिन यहाँ के राजा ने भूटान में बहुदलीय लोकतन्त्र स्थापित करने की शुरुआत कर दी। मार्च 2008 में भूटान में निष्पक्ष चुनाव हुए और राजशाही का अन्त हो गया।

(v) मालदीव-- मालदीव में सन् 1968 तक राजतन्त्रात्मक व्यवस्था कायम रही। सन् 1968 में ही मालदीव एक गणतन्त्रात्मक देश बना तथा यहाँ अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली अपनायी गयी। जून 2005 में मालदीव की संसद ने बहुदलीय प्रणाली को अपनाने के पक्ष में मतदान किया। मालदीविपन डेमोक्रेटिक पाटी (एम.डी.पी.) का मालदीव के राजनीतिक मामलों में दबदबा कायम है।

30. पर्यावरण आंदोलन क्या है? विश्व में पर्यावरण आंदोलन की विविधता की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– **अंटार्कटिका महाद्वीप की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं–**

(i) अंटार्कटिका महादेशीय क्षेत्र का विस्तार 1 करोड़ 40 लाख वर्ग करोड़ किमी. में है।

(ii) विश्व के निर्जन क्षेत्र का 26 प्रतिशत भाग इस महाद्वीप के अन्तर्गत आता है।

(iii) स्थलीय हिम का 90 प्रतिशत भाग एवं धरती के स्वच्छ जल का 70 प्रतिशत भाग इस महाद्वीप में मौजूद है।

(iv) इस महादेश का 3 करोड़ 60 लाख वर्ग किमी. तक अतिरिक्त विस्तार समुद्र में है।

(v) यह विश्व का सबसे सुदूर ठण्डा एवं झंझावाती प्रदेश है।

अंटार्कटिका महाद्वीप का महत्त्व–

अंटार्कटिका महाद्वीप का महत्त्व निम्नलिखित है--

(i) अंटार्कटिका महाद्वीप विश्व की जलवायु को सन्तुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

(ii) इस महाद्वीपीय प्रदेश की आन्तरिक हिमानी परत ग्रीन हाउस गैस के जमाव का महत्त्वपूर्ण सूचना स्रोत है।

(iii) इस महाद्वीपीय प्रदेश में जमी बर्फ से लाखों वर्ष पूर्व के वायुमण्डलीय तापमान का पता लगाया जा सकता है।

(iv) इस महाद्वीपीय क्षेत्र में समुंद्री पारिस्थितिकी तन्त्र अत्यन्त उर्वर पाया जाता है।

(v) यह क्षेत्र वैज्ञानिक अनुसन्धान, मत्स्य आखेट एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

अंटार्कटिका पर स्वामित्व-- विश्व के सबसे सुदूर ठण्डे एवं झंझावाती महादेश अंटार्कटीका पर किसका स्वामित्व है ? इसके बारे में दो दावे किये जाते हैं। कुछ देश, जैसे-ब्रिटेन, अर्जेन्टीना, चिली, नार्वे, फ्रांस, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैण्ड ने अंटार्कटिका क्षेत्र पर अपने अधिकार का दावा किया है, जबकि अन्य अधिकांश देशों का मत है कि अंटार्कटिका प्रदेश विश्व की साझी सम्पदा है और किसी भी राष्ट्र के क्षेत्राधिकार में नहीं आता है।

31. लोकप्रिय जन आंदोलनों से क्या अभिप्राय है? उन आंदोलनों से कौन-कौन से सबक सीखने को मिले हैं?

उत्तर-- **लोकप्रिय जन आन्दोलनों का अभिप्राय--**

वह आन्दोलन जो जनहित या लोगों की कि सामान्य समस्या या समस्याओं में प्रायः दल राजनीति से अलग रहकर चलाये जाते लोकप्रिय जन आन्दोलन कहे जाते

उदाहरणार्थ-चिपको आन्दोलन, दलित पैंथर्स आन्दोलन तथा भारतीय किसान यूनियन आन्दोलन आदि।

जन या सामाजिक आन्दोलनों द्वारा समस्याओं की अभिव्यक्ति या सामाजिक आन्दोलनों के सबक--

(i) जन आन्दोलन सामाजिक आन्दोलनों के रूप में जब उन्नति की सीढ़ियों पर चढ़ते हैं तो उनके द्वारा समाज के उन नए वर्गों को सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को अभिव्यक्ति मिलती है जो अपनी परेशानियों को चुनावी राजनीति के माध्यम से हल नहीं करा पाते।

(ii) समाज के गहरे तनावों तथा जनता के रोष को एक सार्थक दिशा देकर इन आन्दोलनों ने एक प्रकार से लोकतंत्र की रक्षा की है। सक्रिय भागीदारी के नए रूपों के प्रयोग ने भारतीय लोकतंत्र के जनाधार को बढ़ाया है।

(iii) इन आन्दोलनों के आलोचक अक्सर यह तर्क देते हैं कि हड़ताल, धरना व रैली जैसी सामूहिक कार्यवाहियों से सरकार के कामकाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। उनके अनुसार इस तरह की गतिविधियों से सरकार को निर्णय-प्रक्रिया बाधित होती है और प्रतिदिन की लोकतांत्रिक व्यवस्था भंग होती है।

32. गठबंधन सरकारों के उदय के लिए उत्तरदायी कारणों को समझाते हुए इसके प्रभावों को लिखिए।

उत्तर-- **गठबंधन सरकार के उदय के कारण निम्नलिखित हैं--**

1. कांग्रेस के प्रभाव में कमी-- आजादी के बाद से ही प्रमुख और शक्तिशाली कांग्रेस पार्टी का प्रभाव 1989 आते-आते कम होना शुरू हो गया। अतः अनेक राजनीतिक दलों वाले राजनीतिक वातावरण में गठबंधन का चलन शुरू हुआ।

2. क्षेत्रीय दलों का प्रभाव एवं संख्या-- 1989 में क्षेत्रीय दलों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ उनके प्रभाव में बढ़ोत्तरी को पहचाना यह जा सकता है। अपनी क्षेत्रीय प्रसार की सीमा के कारण ऐसे दलों का केन्द्रीय स्तर पर गठबंधन बनाना जरूरी हो जाता है।।

3. दल बदली-- 1989 के बाद से ही दल बदली की प्रवृत्ति ने भारतीय राजनीति में गत अपना रंग दिखाना शुरू कर दिया था। इस हैं, ता प्रवृत्ति ने भी गठबंधन सरकारों के चलन को हैं। बढ़ाया।

गठबंधन की राजनीति के प्रभाव- ऐसी राजनीति जिसमें चुनाव के पूर्व अथवा पश्चात् आवश्यकतानुसार दलों में सरकार के गठन अथवा अन्य मामले (जैसे राष्ट्रपति चुनाव) में आपसी सहमति बन जाए तथा वे सामान्यतः एक स्वीकृत न्यूनतम साझे कार्यक्रम के अनुसार राज्य में राजनीति चलाएँ तो इसे गठबंधन की राजनीति कहा जाता है। भारत में गठबंधन की राजनीति के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(i) 1990 के दशक के पश्चात् कुछ ताकवर पार्टियों व आन्दोलनों का उदय हुआ। इन पार्टियों एवं आन्दोलनों ने दलित व पिछड़े वर्ग (अन्य पिछड़ा वर्ग) का नेतृत्व किया। (ii) उभरी हुई पार्टियों में से अनेक ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं की भी दावेदारी प्रस्तुत की।

(iii) भारत में गठबंधन की राजनीति से अनेक क्षेत्रीय दलों ने राज्यों में सरकारें बनाई तथा केन्द्र सरकार में भी भागीदारी की।

33. बांग्लादेश निर्माण के कोई तीन प्रमुख कारण लिखिए।

उत्तर— **बांग्लादेश का निर्माण क्यों एवं कैसे–** सन 1947 से सन् 1971 तक बांग्लादेश पाकिस्तान का एक अंग था; जिसे पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था। ब्रिटिश शासन काल के दौरान बंगाल और असम के विभाजित हिस्सों से पूर्वी पाकिस्तान का यह क्षेत्र बना था, लेकिन अनेक कारणों से पूर्वी पाकिस्तान के लोग पाकिस्तान की सरकार से नाराज थे बांग्लादेश निर्माण के प्रमुख कारण निम्नलिखित है--

(i) पूर्वी पाकिस्तान के ऊपर उर्दू भाषा लादना– पूर्वी पाकिस्तान के लोग पश्चिमी पाकिस्तान के दबदबे एवं अपने ऊपर उर्दू भाषा को थोपने के खिलाफ थे।

(ii) प्रशासन एवं राजनीतिक सता में समुचित हिस्सेदारी की माँग-- पूर्वी पाकिस्तान की जनता ने पाकिस्तान के प्रशासन में अपने क्षेत्र के न्यायोचित प्रतिनिधित्व एवं राजनीतिक सत्ता में समुचित हिस्सेदारी की माँग उठायी । पश्चिमी पाकिस्तान के प्रभुत्व के विरुद्ध जन संघर्ष का नेतृत्व शेख मुजीबुर्रहमान ने किया । उन्होंने पूर्वी क्षेत्र के लिए स्वायत्तता की मांग की।

(iii) सन् 1970 के आम चुनावों में शेख मुजीबुर्रहमान की अवामी लीग पार्टी को बहुमत मिलना-- सन् 1970 के आम चुनाव में शेख मुजीबुर्रहमान के नेतृत्व वाली अवामी लीग पार्टी को पाकिस्तान की समस्त सीटो पर विजय प्राप्त हुई। अवामी लीग को सम्पूर्ण पाकिस्तान के लिए प्रस्तावित संविधान सभा में बहुमत प्राप्त हो गया। लेकिन पाकिस्तान सरकार पर पश्चिमी पाकिस्तान के नेताओं का दबदबा था; फलस्वरूप सरकार ने इस सभा को आहूत करने से इंकार कर दिया। इससे शेख मुजीब को

गिरफ्तार कर लिया गया। जनरल याहिया खान के सैनिक शासन में क वह पाकिस्तानी सेना ने बंगाली जनता के आन्दोलन को कुचलने की कोशिश की।

34. विभिन्न देशों के सामने सबसे गम्भीर चुनौती वैश्विक पर्यावरण को आगे कोई नुकसान पहुँचाए बगैर आर्थिक विकास करने की है। यह कैसे हो सकता है? कुछ उदाहरणों के साथ समझाइए।

उत्तर— विश्व समुदाय ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की है कि विकास की रणनीति ऐसी हो कि पर्यावरण की सुरक्षा को खतरा उत्पन्न न हो। एक वैकल्पिक अवधारणा के रूप में सन् 1987 में छपी बर्टलैण्ड रिपोर्ट (अवर कॉमन फ्यूचर) में टिकाऊ विकास यानी (Sustainable Development) का प्रतिपादन किया गया था। रिपोर्ट में चेताया गया था कि औद्योगिक विकास के चालू तौर-तरीके आगे चलकर प्राकृतिक संसाधनों की दृष्टि से टिकाऊ साबित नहीं होंगे।

सन् 1992 में रियो सम्मेलन में पर्यावरण की रक्षा की दृष्टि से टिकाऊ विकास की धारणा पर बल दिया था। टिकाऊ विकास रणनीति में विकास के ऐसे साधन अपनाए जाते हैं कि प्राकृतिक संसाधन पर्याप्त व जीवन्त बने रहें। इसमें विकास को पर्यावरण रक्षा के साथ 'जोड़ दिया जाता है तथा प्राकृतिक संसाधनों नीतिक की रक्षा विकास का लक्ष्य बन जाता है। उदाहरण के लिए; वर्तमान में हम ऊर्जा की माँग को देखते हुए गैर-परम्परागत स्रोतों; जैसे-पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, भू-तापीय, बायो गैस आदि का दोहन कर सकते हैं, जिससे विकास में ऊर्जा की आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधन भी संरक्षित न को रहेंगे। इसी तरह नवीन तकनीकों व मशीनों में प्रयोग कर ग्रीन हाउस गैसों व क्लोरोफ्लोरो नवामी कार्बन गैसों के उत्सर्जन को कम कर सकते हैं। विकास के साथ वनों का संरक्षण, भू-जल सम्पूर्ण संरक्षण, सामाजिक-वानिकी आदि को अपनाकर हम संसाधनों की सुरक्षा के साथ-साथ विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

निष्कर्षतः टिकाऊ विकास की धारणा के द्वारा हम पर्यावरण रक्षा व विकास दोनों लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

35. गैर राजनीतिक दलो के स्वतंत्र आंदोलनों के उदय व विकास के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— **गैर-राजनैतिक अथवा स्वतंत्र आन्दोलनों के उदय व विकास के कारण**

(i) गैर-कांग्रेसवाद का प्रयोग असफल होना-- सत्तर व अस्सी के दशकों में समाज के अनेक वर्गों का राजनीतिक दलों के आचार-व्यवहार से मोह भंग हुआ। इसका तात्कालिक कारण था कि जनता पार्टी के रूप में गैर-कांग्रेसवाद का प्रयोग विशेष रूप से नहीं चल पाया तथा राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण निर्मित हुआ। ।

(ii) केन्द्र सरकार की आर्थिक नीतियों से निराशा-- सन् 1970 के दशक के प्रारम्भ होने के साथ ही पंचवर्षीय योजनाएँ असफल होने ली। सरकार गरीबी, बेरोजगारी, महँगाई की समस्या पर काबू नहीं कर सकी। अतः सरकार की आर्थिक नीतियों से लोगों का मोहभंग हुआ।

(iii) आर्थिक व सामाजिक असमानताएँ-- आर्थिक समृद्धि होने के बावजूद उसका लाभ प्रत्येक वर्ग को नहीं मिला। धनिक व निर्धन वर्ग के बीच एक खाई पनपी। जातिगत आधार पर समाज लिंग भेद तथा असमानता की कुरीति से ग्रस्त था।

(iv) लोकतांत्रिक संस्थाओं में विश्वास की जड़ों का हिलना-- राजनीतिक माहौल में सक्रिय विभिन्न समूहों का विश्वास लोकतांत्रिक संस्थाओं और चुनावी राजनीति से उठ गया। ये समूह दलगत राजनीति से अलग हुए तथा अपने विरोध को स्वर देने के लिए इन्होंने जनता को लामबंद करना प्रारम्भ किया।

(v) मध्यवर्गीय युवाओं की भूमिका-- देश के मध्यम वर्ग के युवा कार्यकर्ताओं ने गांव के निर्धन वर्ग के बीच रचनात्मक कार्यक्रम चलाए एवं सेवा संगठन भी बनाए। इन संगठनों के सामाजिक कार्यों की प्रकृति स्वयंसेवी थी।

अतः इन संगठनों को स्वयंसेवी संगठन अथवा स्वयंसेवी क्षेत्र के संगठन कहा गया।

36. सन् 1989 से कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी की चुनावी उपलब्धियों में क्या प्रमुख प्रवृत्तियों दिखाई दी है?

उत्तर– **सन् 1989 से कांग्रेस की चुनावों में उपलब्धि--** (i) सन् 1989 के आम चुनावों में कांग्रेस पार्टी की पराजय हो गयी थी। उसे बहुमत प्राप्त नहीं हुआ। (ii) कांग्रेस सन् 1991 में दुबारा सत्ता में आई। नरसिम्हा राव देश के प्रधानमंत्री बने। (iii) इसके बाद संयुक्त मोर्चा के दो प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा (जून, 1996 - अप्रैल 1997) तथा इन्द्र कुमार गुजराल (अप्रैल 1997-मार्च 1998) बने। इन्हें कांग्रेस द्वारा बाहर से समर्थन दिया गया। (iv) कांग्रेस पार्टी मई 2004 से दुबारा सत्ता में आई परन्तु यह एक गठबंधन का हिस्सा थी जिसे वाम दलों सहित अन्य कई दलों ने समर्थन दिया था। (v) सन् 2009 में एक बार फिर कांग्रेस गठबंधन को बहुमत प्राप्त हुआ और सरकार बन गयी।

सन् 1989 से भाजपा की चुनावी उपलब्धि–

(i) सन् 1989 से भाजपा ने चुनावों में सफलता हासिल करने की शुरुआत की। उसने लगातार अपनी स्थिति मजबूत को। सन् 1996 में पहली बार भाजपा केन्द्र में सत्तारूढ़ हुई परन्तु अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री की सरकार केवल एक महीने ही अर्थात् मई 1996 से जून 1996 तक केन्द्र में टिक पाई। (ii) पुनः अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री बने और इस बार उन्होंने केवल 20 महीने अर्थात् 19 मार्च 1998 से 13 अक्टूबर, 1999 तक सत्ता संभाली। (iii) एक बार फिर से अटल जो प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त हुए। 13 अक्टूबर, 1999 को उन्होंने दुबारा सत्ता को संभाला तथा अप्रैल 2004 तक पाँच वर्ष का कार्यकाल पूरा किया। इस बार यह सरकार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) द्वारा बनायो गयी थी। (iv) सन् 2004 तथा 2009 के चुनावों में पार्टी को अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हुई। (v) सन् 2014 व 2019 चुनावों में यह पार्टी राजग गठबंधन के साथ सत्ता में जीती। वर्तमान में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इसकी सरकार संचालित है

उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि सन् 1989 के पश्चात् कांग्रेस व भाजपा ने गठबंधन की राजनीति को अंगीकार कर लिया है।

37. भारत-पाकिस्तान के बीच हुए संघर्षों व परिणामों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– **भारत-पाकिस्तान के बीच हुए प्रमुख संघर्ष–**

(i) 1947 का युद्ध-- इसे प्रथम ककश्मीर युद्ध भी कहा जाता है। यह अक्टूबर 1947 में प्रारम्भ हुआ था। पाकिस्तान की सेना के साथ हजारों की संख्या में जनजातीय लड़ाको ने कश्मीर में प्रवेश कर राज्य के कुछ हिस्सो पर हमला कर उन पर कब्जा कर लिया। भारतीय सेना के हस्तक्षेप के बाद कश्मीर के इस भाग को मुक्त कराया गया।

(ii) सन् 1965 का युद्ध-- यह युद्ध भारत-पाकिस्तान के बीच ऑपरेशन जिब्राल्टर के साथ शुरू हुआ। पाकिस्तान कश्मीर में सेना भेजकर यहाँ विद्रोह करना चाहता था। भारत ने भी पाकिस्तान पर सैन्य हमले किये। यह युद्ध 17 दिन तक चला। आखिरकार सोवियत संघ व संयुक्त राज्य द्वारा राजनयिक हस्तक्षेप करने के बाद युद्ध विराम घोषित हुआ।

(iii) सन् 1971 का युद्ध-- यह भारत-पाकिस्तान के बीच तीसरा युद्ध था इसमें पाकिस्तान के 94000 से ज्यादा सैनिकों को बंदी बना लिया गया। इस युद्ध में पाकिस्तान को मुँह की खानी पड़ी। पाकिस्तान विभाजन के पश्चात बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

(iv) कारगिल का युद्ध-- यह सन् 1999 में हुआ। यह कारगिल नामक जगह पर हुआ था, इसी कारण इसे कारगिल का युद्ध कहते हैं। इस अत्यधिक ठंडे इलाके पर पाकिस्तान ने अपना कब्जा कर लिया था। भारत की सेना ने इसका पता चलने पर पाक सेना का मुँहतोड़ जवाब दिया और पाकिस्तान पर विजय प्राप्त की।

38. सतत् विकास को बढ़ावा देने की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर– सतत् विकास को संपोषणीय विकास, धारणीय विकास, टिकाऊ विकास आदि नामों से जाना जाता है। यह वर्तमान आधुनिक विश्व की महती आवश्यकता बन गया है क्योंकि वर्तमान में तीव्र गति से बढ़ती हुयी जनसंख्या को पर्यापत मात्रा में संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करा पाना एक विकट समस्या बन चुकी हैं। आने वाली पीढ़ियों तक प्राकृतिक श्मीर संसाधनों की उपलब्धता को किस प्रकार

सुनिश्चित किया जाये इसके लिए सतत् विकास एक आवश्यक प्रक्रिया बन गयी है जिसमें वर्तमान समय में संसाधनों का विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग करते उन्हें बचाकर रखने व आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने की भाग प्रक्रिया शामिल है जो बिना पर्यावरण को नुकसान पहुंचाये सम्पन की जाये।

सतत् विकास को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक संस्थागत रूपरेखा (आई एस डी) को सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है। विभिन्न देशों का मानना है कि संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के अन्तर्गत खण्डित सतत् विकास रूपरेखा की उपस्थिति व अनेक बहुपक्षीय पर्यावरणीय करारों में बेहतर समन्वय एवं सामंजस्य

स्थापित किये जाने की आवश्यकता है सतत् विकास से सम्बद्ध वर्तमान आयोग को सतत् विकास परिषद में परिवर्तित करने अथवा यू एन ई पो को एक छत्र अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में उन्नयित करने अथवा इकोसॉस के अन्तर्गत एक उच्च स्तरीय राजनैतिक मंच का सृजन करने की आवश्यकता है ताकि सतत् विकास को उच्च स्तरीय राजनैतिक दृश्यता प्रदान की जा सके।

39. भारत में सम्पन्न हुए प्रमुख जन आंदोलनों के बारे में बताइए।

उत्तर– भारत में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के मुद्दों को लेकर जन आंदोलन होते रहे हैं जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नानुसार हैं–

(i) चिपको आंदोलन-- यह भारत के उत्तराखंड के चमौली नामक स्थान पर प्रारम्भ हुआ जन आंदोलन था। जो पेड़ों की रक्षा के लिए सम्पन्न हुआ था। इस आंदोलन में महिलाओं ने अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया था। लोगों के विरोध के आगे झुककर अन्ततः हिमालयी क्षेत्रों में वनों की कटाई पर 15 वर्ष के लिए प्रतिबंध लगा दिया गया। यह आंदोलन सत्तर व अस्सी के दशक में जन आंदोलनों का प्रतीक बन गया था।

(ii) भारतीय किसान आंदोलन-- यह आंदोलन कृषक संघर्ष का एक उदाहरण है। इसका उदय 1985 के जनवरी माह में उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में हुआ जहाँ लगभग 20 हजार लोग एकत्रित हुए थे। इन किसानों के द्वारा बिजली की बढ़ी हुयी दरों का विरोध किया जा रहा था। यह ग्रामीण शक्ति अथवा काश्तकारों को शक्ति का एक बड़ा प्रदर्शन था।

(iii) ताड़ी विरोधी आंदोलन-- यह आंदोलन दक्षिणी भारतीय राज्य आन्ध्रप्रदेश में हुआ था। यह महिलाओं का एक स्वतः स्फूर्त आंदोलन था जिसमें महिलायें अपने समीप बिक्री रही मदिरा की बिक्री का विरोध कर रही थी। ग्रामीण महिलाओं ने शराब के खिलाफ लड़ाई छेड़ रखी थी। यह लड़ाई माफिया व सरकार दोनों के खिलाफ थी। इस मदिरा विरोधी आंदोलन की व्यापकता के आधार पर इसे ताड़ी विरोधी आंदोलन कहा गया था।

(iv) नर्मदा बचाओ आंदोलन-- अस्सी के दशक में नर्मदा घाटी में विकास के लिए नर्मदा व उसकी सहायक नदियों पर 30 बड़े, 135 मझले व 300 छोटे बाँध बनाने का प्रस्ताव रखा गया। इन प्रस्तावित बाँधों के निर्माण से 245 गाँव डूब क्षेत्र में आ रहे थे, जिनके पुनर्वास की सरकार ने कोई व्यवस्था नहीं की थी। इसी मुद्दे को लेकर नर्मदा नदी के बचाव में नर्मदा आंदोलन चलाया गया था।

40. भारत में एक दल की प्रधानता के कारण लिखें।

उत्तर– भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् एक दलीय व्यवस्था का स्वरूप लम्बे समय तक जारी रहा था। इसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी रहे थे–

(i) कांग्रेस का सर्वमान्य पार्टी होना-- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े महत्वपूर्ण लोग कांग्रेस पार्य से जुड़े थे। इसी कारण लोगों का कांग्रेस पार्टी के प्रति अधिक विश्वास था। उस समय कांग्रेस पार्टी का स्थान एक सर्वमान्य पार्टी के रूप में था, जिसके कारण इसको लम्बे समय तक प्रभुसत्ता बनी रही।

(ii) आया-राम गया-राम की नीति-- कांग्रेस की भूमिका कम होने पर जो नई पार्टियों बनीं उनके लोग दल-बदल की प्रक्रिया अधिक करते थे। इसी कारण लोगों का कांग्रेस के प्रति अधिक विश्वास होना एक दलीय व्यवस्था के लिए उत्तरदायी सिद्ध हुआ था।

(iii) अधिकांश पार्टियों कांग्रेस विभाजन से बनना-- भारतीय स्वतंत्र के बाद जिन नये दलों का उद्भव हुआ था उनमे से अधिकांश कांग्रेस से सम्बन्धित थे जिनके कारण लोग कांग्रेस को ही अधिक महत्व देते थे तथा नवीन पार्टियों का वोट प्राप्ति प्रतिशत बहुत कम था।

(iv) राजनीतिक एजेण्डों की समीपता-- अधिकांश नई पार्टियों का अपना कोई प्रभावशाली एजेण्डा नहीं था, जिसके कारण लोगों को नई पार्टियाँ अपनी ओर अधिक आकर्षित नहीं कर सकी और कांग्रेस के रूप में एक दलीय प्रभुत्व बना रहा।

(v) 1967 के पश्चात भी केन्द्र में कांग्रेस की प्रधानता का बने रहना।

(vi) राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों में समानता का होना।

(vii) गठबंधन सरकारों की असफलता।

41. नेपाल में राजतंत्र से लोकतंत्र आने की यात्रा की व्याख्या कीजिए।

उत्तर--- नेपाल भारत के उत्तर में बसा हुआ एक देश है। नेपाल अतीत में एक हिन्दू राष्ट्र था।

(i) लोकतन्त्र समर्थक आन्दोलन एवं संवैधानिक लोकतन्त्र की स्थापना-- नेपाल में लोकतन्त्र की स्थापना हेतु आन्दोलन से मजबूर होकर राजा ने सन् 1990 ई. में लोकतान्त्रिक संविधान की मांग मान ली। इस प्रकार नेपाल में सन् 1990 ई. में लोकतान्त्रिक सरकार का गठन हुआ।

(ii) माओवादियों का शासन के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष-- सन् 1990 ई. के दशक में नेपाल के माओवादियों ने नेपाल के अनेक हिस्सों में अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया। नेपाल में राजा की सेना, लोकतन्त्र समर्थकों एवं माओवादियों के बीच त्रिकोणीय संघर्ष हुआ फलस्वरूप सन् 2002 में राजा ने संसद को भंग कर दिया और सरकार को गिरा दिया। इस प्रकार नेपाल में राजा ने लोकतन्त्र को पूर्णत: समाप्त कर दिया।

(iii) लोकतन्त्र की बहाली-- अप्रैल 2006 में नेपाल में देशव्यापी लोकतन्त्र समर्थक प्रदर्शन हुए। संघर्षरत लोकतन्त्र समर्थकों ने अपनी प्रथम बड़ी जीत तब हासिल की जब राजा ज्ञानेन्द्र ने संसद को बहाल कर दिया। इस संसद को अप्रैल 2002 में भंग कर दिया गया था।

42. पृथ्वी सम्मेलन क्या था? यह सम्मेलन कितना लाभप्रद सिद्ध हुआ?

उत्तर– सन् 1992 में संयुक्त राष्ट्र संघ का पर्यावरण एवं विकास के मुद्दों पर केन्द्रित एक सम्मेलन ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में हुआ। इसे पृथ्वी सम्मेलन कहा जाता है। इस सम्मेलन में 170 देशों,

हजारों स्वयंसेवी संगठनों एवं अनेक बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वैश्विक राजनीति के दायरे में पर्यावरण को लेकर बढ़ते सरोकारों को इस सम्मेलन में एक ठोस रूप मिला। इस सम्मेलन में यह बात खुलकर सामने आयी कि विश्व के धनी एवं विकसित देश अर्थात् उत्तरी गोलार्द्ध तथा निर्धन और विकासशील देश अर्थात् दक्षिणी गोलार्द्ध पर्यावरण के अलग-अलग एजेंडे के समर्थक हैं। उत्तरी गोलार्द्ध के देशों की मुख्य चिन्ता ओजोन परत में छेद एवं वैश्विक तापवृद्धि को लेकर थी। दक्षिणी देश आर्थिक विकास और पर्यावरण प्रबन्धन के आपसी रिश्तों को सुलझाने के लिए अधिक चिन्तित थे।

रियो सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता एवं वानिकी के सम्बन्ध में कुछ नियमाचार निर्धारित हुए। इसमें एजेंडा-21 के रूप में विकास के कुछ तौर-तरीके भी सुझाये गये। इस सम्मेलन में इस बात पर भी सहमति बनी कि आर्थिक वृद्धि का तरीका ऐसा होना चाहिए कि इससे पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। इसे टिकाऊ विकास का तरीका कहा गया।

43. भारत में पर्यावरणीय आंदोलन द्वारा किये गये प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर--- भारत में पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न आन्दोलनों के माध्यम से निम्नलिखित प्रयास किए गए-- (i) स्वतंत्र भारत में वन्यप्राणियों को सुरक्षा हेतु विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभयारन्यो की स्थापना की गयी है। यहाँ सभी प्रकार के जीवों की सुरक्षा की व्यवस्था की गई है।

(ii) सर्वत्र वृक्षारोपण का कार्य प्रारम्भ किया गया तथा वृक्षों की कटाई पर रोक लगा दी गयी। उत्तराखण्ड के पहाड़ी भागों में सुन्दरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में 'चिपको आन्दोलन' चलाया गया।

(iii) कृषि के क्षेत्र में 'हरित क्रान्ति' का सूत्रपात हुआ तथा अन्न के क्षेत्र में आत्म-निर्भरता प्राप्त की गयी।

(iv) सिंचाई सुविधाओं के विस्तार हेतु विभिन्न बाँध बनाए गए हैं। बाँधों से सिंचाई व विद्युत् उत्पादन दोनों का कार्य चलने लगा

(v) सड़कों के विकास हेतु यातायात के क्षेत्र में क्रान्ति लाई गयी तथा चारों ओर सडको का जाल बिछाया गया।

(vi) रेलवे लाइनों को बिछाकर रेल क्षेत्र का विस्तार किया गया। दूरसंचार के क्षेत्र में क्रान्ति लाकर टेलीफोन और इंटरनेट की व्यवस्था की गयी।

44. 1989 के पश्चात भारतीय राजनीति में आए बदलावों का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

गठबंधन की राजनीति वाली विचारधारा किन पहलुओं पर निर्भर थी?

उत्तर–**1. नयी आर्थिक नीति पर सहमति--** कई. समूह नयी आर्थिक नीति के खिलाफ है, लेकिन ज्यादातर राजनीतिक दल इन नीतियों का के पक्ष में हैं। अधिकतर दलों का मानना है कि नई आर्थिक नीतियों से देश समृद्ध होगा और भारत, विश्व की एक आर्थिक शक्ति बनेगा।

2. पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावे की स्वीकृति-- राजनीति दलों ने पहचान लिया है कि पिछड़ी जातियों के सामाजिक और राजनैतिक दावे को स्वीकार करने की जरूरत है। इस कारण आज सभी राजनीतिक दल शिक्षा और रोजगार में पिछड़ी जातियों के लिए सीटों के आरक्षण के पक्ष में हैं। राजनीतिक दल यह भी सुनिशित करने के लिए तैयार हैं कि 'अन्य पिछड़ा वर्ग' को सत्ता में समुचित हिस्सेदारी मिले।

3. देश के शासन में प्रांतीय दलों की भूमिका की स्वीकृति-- प्रांतीय दल और राष्ट्रीय दल का भेद अब लगातार कम होता जा रहा है। प्रांतीय दल केन्द्रीय सरकार में साझोदार बन रहे हैं और इन दलों ने पिछले बीस सालों में देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

4. विचारधारा की जगह कार्यसिद्धि पर जोर और विचारधारागत सहमति के बगैर राजनीतिक गठजोड़-गठबंधन की राजनीति के इस दौर में राजनीतिक दल विचारधारागत अंतर की जगह सत्ता में हिस्सेदारी की बातों पर जोर दे रहे हैं, मिसाल के लिए अधिकतर दल भाजपा की 'हिन्दुत्व' की विचारधारा से सहमत नहीं हैं, लेकिन ये दल भाजपा के साथ गठबंधन में शामिल हुए और सरकार बनाई, जो पाँच साल तक चली।